ISSN 2319-5339 IISUniv.J.A. Vol.3(1), 132-136 (2014)

मृणाल पाण्डे : स्त्री विमर्श

नीतू सिंह चौहान

स्त्री-विमर्श आदिकाल से ही चर्चा का विषय रहा है। स्त्री-विमर्श यानी स्त्री के संबंध में विचार। समाज और संस्कृति में स्त्री के संबंध में अनेक प्रकार की धारणाएँ प्रचलित रही हैं। उसे अलग-अलग रूपों में देखा गया। वैदिक काल में स्त्री शिक्षित और स्वतंत्र थी और सभी कार्यो में उसका सहभाग था। समाज में उसे गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। उत्तर वैदिक काल से उसकी अवनति प्रारंभ हुई। उसका स्थान घर तक सीमित होने लगा। उपनिषद् तथा सूत्रकाल तक आते-आते उसकी स्थिति में और गिरावट आई। महाकाव्य काल तक आते-आते उसकी दशा और दयनीय हो गई। उसके स्वतंत्र अस्तित्व का नामोनिशान न रहा । आधुनिक युग की स्थितियों ने स्त्री में नई चेतना का संचार किया। आधुनिक काल में यह चर्चा लगभग अस्सी के दशक से अधिक मात्रा में शुरू हुई। स्त्री-संबंधी चर्चा या बहस तब से शुरू हुई, जब संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1965 में वह वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मनाने का संकल्प किया था। विभिन्न साहित्यकारों ने इसे अपने साहित्य का विषय बनाया जिससे साहित्य में एक नए मोड़ ने जन्म लिया और वह है स्त्री-विमर्श ।

आधुनिक युग में 'मृणाल पाण्डे' स्वतंत्र तथा प्रखर लेखन के लिए जानी जाती है। उनका लेखन स्त्री -विमर्श के संकीर्ण दायरे में सिमटा हुआ नहीं है। परन्तु वह स्त्री-जीवन और वास्तविकताओं को लेकर अनेक ऐसे प्रश्न उठाती हैं जिनका जवाब 21वीं सदी में भी हमारे पास नहीं है। समानता का अधिकार होते हुए भी हजार बरस की असमानता क्यों? कहीं सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्र में जूझती स्त्री की त्रासदी है तो कहीं पर भँवरी ने अपने अधिकारों के प्रति लड़ते हुए अमूक दृश्य अंकित कर दिया है तथा नारीवाद से जुड़ी समस्याओं पर भी बुलंदी से प्रहार किया है।

मुख्य बिन्दु

(1) नारीवाद के सही मायने

(2) स्त्री -विमर्श

(3) कानूनी व्यवस्था का पर्दाफाश

(4) नारी-जीवन का अर्द्धसत्य (शहरी व ग्रामीण)

(5) महिला-सशक्तिकरण

भारतीय समाज में हमेशा से ही महिलाओं को पुरूषों की अपेक्षा दूसरे दर्जे का स्थान मिला है। महिलाओं को प्रत्येक क्षेत्र में कमतर ही आंका गया है जिसके परिणाम स्वरूप ना तो उसे वे अधिकार मिल पाए जिसकी वह अधिकारिणी है और ना उसके पृथक अस्तित्व को नई पहचान। स्त्री-पुरूष दोनों एक ही रथ के पहिये हैं उन्हे समग्र रूप से देखना चाहिए। लेखिका महादेवी वर्मा के अनुसार ''आज के युग में स्त्रियों की पराधीनता का मूल कारण अर्थतंत्र से जुड़ा हुआ है,''[1] परन्तु आज साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति को कोई नहीं नकार सकता । महिला लेखन ने आज हिन्दी साहित्य के केन्द्र बिन्दु से लेकर मुख्यधारा तक जगह बना ली है। स्त्री समाज का वह स्वप्न है जिसके बिना स्वप्नलोक की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती फिर नारी की समस्या समाज की समस्या कैसे हो सकती है?

लेखिका 'मृणाल पाण्डे' ने समाज में घटित हो रही घटनाओं को अपनी कुशलता व शिद्दत से प्रखर चेतना प्रदान की है तथा महिलाओं की दमित शोषित परिस्थितियों को प्रमुख रूप से उजागर किया है, उन्होंने अपने निबन्धों के माध्यम से महिलाओं की शोषित सामाजिक छवि और उन पर हो रहे अत्याचार और उनकी मार्मिक दशा को बताकर समाज के सामने लाने का प्रयत्न किया है। महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार मिलने तो लगे हैं, परन्तु आज भी वह बराबरी के दर्जे में नहीं आयी है।'' हमारे लोकतंत्र में आज महिला-वोटरों की तादात लगभग आधी है, लेकिन वे लोकतांत्रिक प्रणाली में अपनी जमात की कोई सार्थक पहचान नहीं बना पाई है''[2]

लेखिका ने 'परिधि पर स्त्री' निबंध संग्रह में नारीवाद से जुड़ी समस्याओं पर प्रकाश डाला है। लेखिका ने शोषित, प्रताड़ित, ग्रामीण, शहरी, कामकाजी महिलाओं के दुख-दर्द को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है ताकि नारीवाद महज़ नारों या निजी स्वार्थ से लिप्त कुछ संगठनों तक ही सीमित होकर न रह जाए, क्योंकि यह एक ऐसा विषय है कि अच्छे खासे बुद्धिमान पुरूष भी इसको हाथ में लेते ही अपनी सरल मानवीयता छोड़कर एक पकी-पकाई भाषा में एक धारा के सुर में ऐसे कई वक्ताओं की वक्तृता, बहस अक्सर अनुवाद के आधार पर नहीं बल्कि सिर्फ बहस उठाने भर के लिए करते हैं।

'मन न रंगाए जोगी कपड़ा' निबंध में मृणाल जी ने शंकराचार्य जैसे सम्माननीय व्यक्ति की नारियों के प्रति प्रतिगामी और संकीर्ण विचारों का परिचय दिया है । आज युग बदल रहा है लेकिन पुरूषों के स्त्री के प्रति संकुचित दृष्टिकोण में कोई बदलाव नहीं आया है। कलकत्ता विश्वविद्यालय के परिसर में आयोजित एक उत्सव के शुभारंभ के दौरान सुश्री अरूंधती राय चौधरी द्वारा वैदिक ऋचाओं का पाठ होना था परन्तु ''अतिथि पुरी शंकराचार्य ने तुरंत आगबबूला हो एक दूत भेजकर प्रतिवाद किया और कहा कि यदि उनकी उपस्थिति में एक स्त्री वैदिक ऋचाओं का पाठ करती है तो वे उठकर चले जाएँगें''।[3]

जहाँ हमारे भारतीय समाज में स्त्रियों को माता-बहनों का आदर दिया जाता है वहीं इसी समाज में उनकी ऐसी स्थिति भी है। मृणाल जी ने ऐसे सार्वजनिक स्थलों पर भी स्त्रियों की भयावह स्थिति का पर्दाफाश किया है और यही सिलसिला घर और बाहर लगभग हर स्त्री की कहानी है। उस पर हमारे अखबार और जागरूक महिला संगठन उदारता विरोधी कठोर मूल्यांकन पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

'गरीबी का महिलाकरण' निबंध में मजदूर और कामकाजी महिलाओं के शोषण का मुद्दा उठाया है। पुरूषों के बराबर काम करके भी उन्हें उनके एवज में भत्ता कम दिया जाता है और उस पर हमारे नेताओं और कानून सभी की आँखे भी ओझल होती दिखायी देती हैं।'' हम सब चाहे स्त्री हो या पुरूष, मानव-शक्ति के रूप में ही स्वीकारे जाएँ, किन्तु नामवाद अपने आप में एक अपर्याप्त सिद्धान्त है।''[4]

मृणाल पाण्डे स्वंय एक पत्रकार के रूप में जानी जाती हैं, साथ ही श्रेष्ठ निबंधकार भी। 'नारी वोटर बैंक' निबंध में महिला वोटरों की सामाजिक, आर्थिक समस्या को चित्रित किया है उनके अनुसार गरीबी और निरक्षरता की परिधि में आने वाली महिलाओं की तादाद में कोई गिरावट नहीं आई है। हमारे लोकतंत्र में महिलाओं का इस्तेमाल सिर्फ वोटर बैंक के रूप में होता है। ''हजार बरस की असमानता क्यों'' - निबंध में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, संयुक्त राष्ट्र संघ की ताजा रपट के अनुसार पुरूषों के बराबर आर्थिक और राजनैतिक सत्ता पाने में अभी भी हजार बरस लगेगें।

आज स्त्री को आदर्श का मोह नहीं है, वह मुक्त होकर अपनी अस्मिता की पहचान करती नजर आती है। 'भवँरी नाम है एक लहर का' निबंध में ऐसी ही स्त्री के संघर्ष, चेतना और नैतिक गरिमा को उभारा गया है। भवँरी बलात्कार से प्रताड़ित स्त्री है जो समाज द्वारा बहिष्कृत और अपमानित की जाती है। पुलिस प्रशासन में अर्जी देने पर उसे झूठा करार

दे दिया जाता है परन्तु ''अन्याय के आगे टूटना नहीं, झुकना नहीं और अपनी सच्चाई पर अड़े रहना है, इसकी एक मिसाल बनकर उभरी है भँवरीबाई!''[5] आखिरी दम तक लड़ते-लड़ते परिणामस्वरूप आरोपी को अग्रिम जमानत पर छोड़ दिया जाता है। समाज द्वारा बहिष्कृत करने पर उसके अपने ही उससे रिश्ता तोड़ लेते हैं । मृणाल जी ने यहाँ पर दलित महिला संघर्ष की करूण कथा कहीं है, समाज में किस प्रकार उनका शोषण हो रहा है।

''महिला शरणार्थियों की त्रासदी में शरणार्थी महिलाओं का सत्य प्रकट किया है। कैसे वे स्त्रियाँ पारम्परिक, आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा से वंचित रहती है और अपराधों का शिकार होती हैं । इन शरणार्थियों को सरकार के योगदान की जरूरत होती है जो इन्हें नहीं मिल पाता। विविध क्षेत्रों में नारी शोशण को नई आवाज दी है।'' 'नारी तुम केवल उपभोक्ता हो' निबंध में काम ज्यादा व तनख्वाह कम साथ ही निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में महिलाओं की छंटनी हो रही है। कामकाजी औरतों को तो फिर भी अपने अधिकार मिलते हैं। परन्तु गाँव में तो कानून का दूर-दूर जक कोई वास्ता नहीं होता। 'छोटे पर्दे पर स्त्री' निबंध में मृणाल जी ने छोटे पर्दे पर हो रहे स्त्रियों के इस्तेमाल का चित्रण किया है। और नारीवाद का इस्तेमाल करने वालों के खिलाफ लेखिका ने आँखें लाल की है।

'स्त्री विमर्श' आज के समय की जरूरत है। आधुनिकता और उदार सोच के तमाम दावों के बावजूद स्त्री की सामाजिक स्थिति या उत्थान में कोई बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं आया है। स्त्री, आज भी समझौते और दोहरे कार्यभार के मध्य पिस रही है। साहित्य, शिक्षा हो या सामाजिक संगठन, हर क्षेत्र में स्त्रियाँ अपनी-अपनी लड़ाई लड़ रही हैं। मृणाल पाण्डे, अपने निबंधों के जरिए समाज में हो रही घटनाओं के बावजूद स्त्री चेतना के लिए अपनी उपस्थिति पूरी गहराई और प्रमाणिकता के साथ दी है। शोषित महिलाओं को अपने हक के लिए लड़ना सिखाया है।

भारतीय समाज में नारी चेतना एक सुलगता हुआ प्रश्न है। आदिकाल से लेकर वर्तमान समय तक स्त्री चर्चा का विषय रही है। यह एक ऐसा विषय है जो आगे भी थमने वाला नहीं है। स्त्री के बिना समाज भी अधूरा है और साहित्य भी। स्त्री विमर्श की शुरूआत 19 वीं सदी में की गयी थी किन्तु उसमें आया बदलाव सराहनीय है। साथ ही, आज की समकालीन लेखिकाओं की पुरूष विरोधी मानसिकता में भी परिवर्तन आया है। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध और 20वीं सदी के पूर्वाद्ध महिला लेखन में स्त्री लेखन का विषय पुरूष न होकर

सामाजिक रूढ़ियाँ रही, पितृसत्तामक सामाजिक व्यवस्था में मुक्ति की आकांक्षा को लेखिकाओं ने अपना विषय बनाया जो कि सराहनीय प्रयास है।

आधार ग्रंथ - परिधि पर स्त्री

संदर्भ ग्रंथ सूची -

महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य - डॉ. मानवेश नाथ दास, पृ.सं.- 129
परिधि पर स्त्री - मृणाल पाण्डे - पृ.सं.- 24
परिधि पर स्त्री - मृणाल पाण्डे - पृ.सं.- 15
स्त्री उपेक्षिता - सीमोन द बोउवर - डॉ. प्रभा खेतान,
परिधि पर स्त्री - मृणाल पाण्डे - पृ.सं.- 40